

इसरो के अभियान को पिलानी के वैज्ञानिक देंगे गति

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

पिलानी. देश की सामरिक शक्ति को बढ़ाते हुए केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी पिलानी) के वैज्ञानिकों ने थर्मिओनिक एमिटर सिस्टम (तापायनिक उत्सर्जन प्रणाली) के विकास में सफलता प्राप्त की है। थर्मिओनिक एमिटर सिस्टम से इसरो के अंतरिक्ष अभियान को गति मिलेगी।

दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह में सीरी, पिलानी में आयोजित एक समारोह में थर्मिओनिक एमिटर सिस्टम को इसरो को हस्तांतरित



पिलानी. सीरी के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित थर्मिओनिक एमिटर सिस्टम।

किया गया है। थर्मिओनिक एमिटर सिस्टम को इसरो के आगामी एसटीएस 1 मिशन में पीएसएलवी सी-54 में उपयोग में लिया जाएगा।

वर्तमान में इन थ्रस्टर्स का आयात किया जा रहा है। सामरिक क्षेत्र में

उपयोग होने के कारण इन एमिटरस का व्यावसायिक उत्पादन नहीं किया जाता। इसीलिए विश्व में एक-दो उद्यमों के अलावा कोई अन्य उद्यम इसका व्यावसायिक उत्पादन नहीं करता है। पढ़ें इसरो @ पेज 06

क्या है थर्मिओनिक एमिटर

सीरी संस्थान के निदेशक डॉ. पीसी पंचारिया ने बताया कि थर्मिओनिक एमिटर, उच्च शक्ति की विद्युत प्रणोदन प्रणाली (ईपीएस) का महत्वपूर्ण घटक है। इसे अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किए जाने वाले सैटेलाइट

में उपयोग में लाया जाता है। सुदूर अंतरिक्ष की कक्षा में उपग्रह की स्थिति एवं गति को कई प्रणोदन प्रणालियों, यथा रासायनिक तथा इलेक्ट्रॉनिक प्रणोदन प्रणाली से नियंत्रित किया जाता है।

स्वदेशीकरण की ओर बड़ा कदम

हाल ही में इलेक्ट्रॉनिक प्रणोदन प्रणाली, जैसे कि आयन थ्रस्टर्स की पहचान उनके उच्च निकास प्रणोदक वेग के कारण बड़ी क्षमता के लिए की गई है। उन्होंने बताया कि इसरो उच्च शक्ति या थ्रस्ट वाली विद्युत प्रणोदन प्रणाली (ईपीएस) के स्वदेशीकरण की ओर बढ़ रहा है। इसके लिए उन्हें थर्मिओनिक उत्सर्जक की आवश्यकता है।